Date: 7/8/2020
Page No.: 1

निशा कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
VMC, हाजीपुर

MIL हिन्दी
B.A Part - I

संधि

दो वर्णों के मेल से होनेवाले विकार को 'संधि' कहते हैं। 'संधि' संस्कृत का शब्द है। दो शब्द या पद जब एक-दूसरे के पास होते हैं, तब उच्चारण की सुविधा के लिए पहले शब्द के अंतिम और दूसरे शब्द के प्रारंभिक अक्षर एक-दूसरे से मिल जाते हैं। संधि में जब दो अक्षर या वर्ण मिलते हैं, तब उनकी मिलावट से विकार उत्पन्न होता है। वर्णों की यह विकारजन्य मिलावट 'संधि' है। इस मिलावट को समझकर वर्णों को अलग करते हुए पदों को अलग-अलग कर देना 'संधि-विच्छेद' है।

हिन्दी भाषा में संधि द्वारा संयुक्त शब्द लिखने का सामान्य चलन नहीं है,

पर संस्कृत भाषा में संधि के बिना काम नहीं चलता क्योंकि संस्कृत के बहुत से तत्सम शब्द या पद हिंदी में चले आए हैं, इसलिए हिंदी व्याकरण में संस्कृत की संधियों और अनेक नियमों को भी ग्रहण कर लिया गया है। शब्दरचना में संधियाँ उसी तरह सहायक हैं, जैसे उपसर्ग, प्रत्यय और समास।

संधि के भेद – वर्णों के आधार पर संधि के तीन भेद हैं –

क) स्वर संधि, ख) व्यंजन संधि ग) विसर्ग संधि।

क) स्वर संधि – दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं।

ख) व्यंजन संधि – व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं।

ग) विसर्ग संधि – विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

क्रमशः